क्या आई.क्यू. टेस्ट सच बोलते हैं?

आई.क्यू. टेस्ट यानी बुद्धिमत्ता परीक्षण के परिणाम कितने विश्वसनीय होते हैं? यह सवाल बहुत महत्त्व रखता है क्योंकि आजकल कई मामलों में व्यक्तियों के बारे में फैसले इन परीक्षणों के आधार पर ही होते हैं। और तो और, संयुक्त राज्य अमरीका में तो कई मर्तबा इन परीक्षणों के परिणाम ज़िन्दगी और मौत का फैसला कर देते हैं।

अमरीका में एक कानून है जिसके तहत मानसिक रूप से पिछड़े व्यक्ति को निर्मम व असाधारण सज़ा देने पर प्रतिबंध है। ऐसे व्यक्तियों को मौत की सज़ा देना प्रतिबंधित है। मानसिक पिछड़ेपन का आकलन आई.क्यू. परीक्षण के आधार पर किया जाता है। इस संदर्भ में सिमोन व्हिटेकर ने देखने का प्रयास किया कि आई.क्यू. टेस्ट में गलतियां होने की संभावना कितनी है और इन गलतियों का स्रोत क्या है।

व्हिटेकर ने मुख्य रूप से दो प्रचलित आई.क्यू. टेस्ट का विश्लेषण किया है। एक है वेचस्लर एडल्ट इंटेलिजेन्स स्केल फॉर एडल्ट्स (WAIS-III) जिसका उपयोग 16 से 93 वर्ष के लोगों पर किया जा सकता है। दूसरा टेस्ट है वेचस्लर एडल्ट इंटेलिजेन्स स्केल फॉर चिल्ड्रन (WAIS-IV) जो 6 से 16 वर्ष के बच्चों के लिए उपयुक्त है। दोनों ही मामलों में परीक्षण मैनुअल कहता है कि इन परीक्षणों में आप 95 प्रतिशत यकीन से कह सकते हैं कि व्यक्ति का वास्तविक आई.क्यू. उनके टेस्ट स्कोर से 4 पॉइन्ट कम-ज़्यादा होगा।

मगर व्हिटेकर ने पाया कि WAIS-III के संदर्भ में जिन व्यक्तियों का आई.क्यू. स्कोर अत्यंत कम हो उनके मामले में संभव है कि वास्तविक आई.क्यू. उनके टेस्ट स्कोर से 16 पॉइन्ट ज़्यादा या 26 पॉइन्ट तक कम हो। इसी प्रकार से, WAIS-IV परीक्षण के संदर्भ में स्कोर की तुलना में वास्तविक आई.क्यू. 25 पॉइन्ट कम या 16 पॉइन्ट ज़्यादा तक हो सकता है।

अब ज़रा अमरीकी कानून के संदर्भ में इस तथ्य को देखिए। वहां मानसिक पिछड़ेपन की सीमा रेखा 70 के स्कोर पर तय की गई है। व्हिटेकर का कहना है कि इतने कम आई.क्यू. वाले व्यक्ति के मामले में संभव है कि उसका टेस्ट स्कोर सही स्थिति न दर्शाए। खास तौर से यदि व्यक्ति को मालूम है कि उसके भाग्य का फैसला इसी टेस्ट के आधार पर होने जा रहा है, तो टेस्ट स्कोर में और भी ज़्यादा गड़बड़ियां होने की संभावना है। व्हिटेकर ने यह भी पाया कि मैनुअल में घट-बढ़ की जो सीमाएं दी गई हैं उनमें गलती के सिर्फ एक स्रोत का ध्यान रखा गया है - कि टेस्ट स्कोर उन मानसिक कारकों को कितना अच्छे से नापता है। मगर गलतियों के कई अन्य स्रोत हो सकते हैं। जैसे इस बात से भी फर्क पड़ता है कि व्यक्ति ने ऐसे टेस्ट कितनी बार पहले किए हैं। टेस्ट की परिस्थिति का भी असर पड़े बिना नहीं रहेगा।

व्हिटेकर का सुझाव है कि अदालतों को सिर्फ आई.क्यू. टेस्ट के स्कोर्स पर नहीं बल्कि व्यक्ति के पूरे व्यक्तित्व पर ध्यान देना चाहिए। वैसे अमरीका की बात को जाने दें, तो भी लगता है कि व्हिटेकर ने बुद्धि के इस तरह के मापन को लेकर महत्त्वपूर्ण सवाल उठाए हैं। कम से कम इस अध्ययन से इतना तो साफ है कि आंख मूंदकर ऐसे परीक्षणों को लागू करना और उनके आधार पर व्यक्तियों के बारे में फैसले करना उचित नहीं है।

(स्रोत फीचर्स)

स्रोत सजिल्द

स्रोत के पिछले अंक

उपलब्ध हैं